शिक्षाविद् विनोद रैना नहीं रहे

डॉ. अमित सेन गुप्ता

चालीस साल पहले की बात है। दिल्ली विश्वविद्यालय से भौतिकी में पीएचडी एक युवा स्कॉलर मध्यप्रदेश स्थित होशंगाबाद जाने के लिए गाड़ी पकड़ता है। यही विनोद रैना के जीवन में बदलाव लाने वाला क्षण था। इस छोटी-सी यात्रा के बाद जीवनभर के लिए वे एक सच्चे सामाजिक कार्यकर्ता व शिक्षाविद् में तब्दील हो जाने वाले थे। वे सैद्धांतिक भौतिकी की चमक-दमक भरी दुनिया को पीछे छोड़ आए और शिक्षा व ज्ञान के सार्वजनीकरण के जरिए सामाज में बदलाव लाने वाले संघर्ष में कूद पड़े।

दिल्ली में कैंसर की बीमारी से चार साल तक संघर्ष करने के बाद गुरुवार को विनोद रैना का देहान्त हो गया। इस तरह हिन्दुस्तान में चल रहे लोकतांत्रिक आंदोलनों ने अपने एक साथी को खो दिया। शायद वे अपने को इसी तरह याद किया जाना सबसे ज्यादा पसंद करते। एक ऐसे आन्दोलनकारी जो विज्ञान, ज्ञान व इनकी मुफ्त उपलब्धता के बारे में अपने पक्ष को लेकर स्पष्ट थे। जिन्हें लोकतांत्रिक मूल्यों पर यह भरोसा था कि यही सांप्रदायिक व कट्टरपंथी राजनीति के प्रभाव से हमें बचा सकते हैं।

विनोद के लिए शिक्षा आजीवन एक जुनून की तरह रही। होशंगाबाद के लिए उनकी यह रेल यात्रा होशंगाबाद विज्ञान कार्यक्रम के साथ उनके जुड़ाव की शुरुआत थी। आगे चलकर वे देश में विज्ञान शिक्षण कार्यक्रम में नई राहें खोलने वाली संस्था एकलव्य की स्थापना से जुड़े। विनोद के नज़रिए व बौद्धिकता के विस्तार में ही यह निहित था कि वे जिस काम से जुड़ने जा रहे थे वह केवल एक छोटा एनजीओ कार्यक्रम मात्र बनकर रह जाने वाला नहीं था। जल्द ही एकलव्य इस बात का उदाहरण बनकर उभरा कि कैसे शिक्षा रुचिपूर्ण व साथ ही स्वाधीन करने वाली हो सकती है और इसकी सफलता ने देश भर में प्रचलित शिक्षण पद्धतियों पर अपनी छाप छोड़ी। उनका नज़रिया सदा ही काफी व्यापक रहा। उन्होंने शिक्षा की बदलवाकारी क्षमता के लिए मूल्य निर्धारित किए। शायद वे स्वयं भी इस बात से सहमत होते कि उनके आजीवन किए काम की परिणति सन् 2009 में भारतीय संसद द्वारा शिक्षा का अधिकार अधिनियम (आरटीई) को पारित करने के रूप में सामने आई। आरटीई विनोद को बहुत प्रिय था और वे इसे मूर्त रूप देने व इसके बारे में जनमत बनाने के लिए लगातार लड़ते रहे। इसके पास हो जाने के बाद भी इसे लागू करने

के लिए लगातार प्रयास करते रहे। अफसरों, नीति-निर्माताओं व जमीनी स्तर के कार्यकर्ताओं से मिलने व उन्हें कानून की असल भावना समझाने के लिए वे लगातार विभिन्न राज्यों व जिलों की यात्राएं करते रहे।

1984 में भोपाल गैस कांड के समय भारतीय इतिहास में घटित सबसे वीभत्स कॉर्पोरेट अपराध के पीड़ितों को न्याय दिलाने के संघर्ष में वे सबसे आगे रहने वालों में से थे। छोटे संघर्षों को सामाजिक बदलाव के बड़े आंदोलनों में बदलने में विनोद की रुचि रही इसी ने उन्हें पीपुल्स साइंस मूवमेंट इन इंडिया (भारत में जन-विज्ञान आंदोलन) के सह-संस्थापकों में से एक के रूप में स्थापित किया। 1987 में ऑल इंडिया पीपुल्स साइंस नेटवर्क स्थापित होने के समय से लेकर उनकी मृत्यु तक वे इसका नेतृत्व करने वाले मुख्य व्यक्तियों में से एक रहे। यह स्वाभाविक ही था कि विनोद पीपुल्स साइंस मूवमेंट के उन मुख्य कार्यकर्ताओं में से एक थे जिन्हें 1990 में भारत ज्ञान विज्ञान समिति (बीजीवीएस) के बनने में सहयोग करना था। कुछ वर्षों तक विनोद बीजीवीएस के राष्ट्रीय महासचिव रहे तथा 1990 में देशभर में चले साक्षरता आंदोलन से जुड़े महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों में से एक रहे। उन्होंने देश के ग्रामीण व दूरस्थ इलाकों में ज्ञान विज्ञान विद्यालय नामक सामुदायिक स्कूल खोलने वाले बीजीवीएस के एक कार्यक्रम में भी सहयोग किया।

विनोद आजीवन लोकतंत्र व अधिकारों के लिए चलने वाले स्थानीय संघर्षों के प्रति प्रतिबद्ध रहे। हालांकि विज्ञान व शिक्षा विनोद के लिए एक तरह से पहला प्यार थे किन्तु वे पर्यावरण आंदोलन से भी जुड़े और पूंजीवादी विकास के उन पीड़ितों के पक्ष में बोलने वाली एक महत्त्वपूर्ण आवाज बने जिन्हें अपनी जमीन छोड़ने के लिए मजबूर किया गया और इसी कारण उनकी रोजी-रोटी छिन गई। नर्मदा बचाओ आंदोलन, देश के बहुत से हिस्सों में चले परमाणु विरोधी संघर्ष तथा इसी तरह के दूसरे कई जन आंदोलनों को विनोद में एक अथक संघर्षकर्ता व कॉमरेड दिखाई देता था।

विनोद कहते थे कि बाद के दिनों का उनका सारा काम होशंगाबाद जिले के सरल ग्रामीण लोगों से सीखी चीजों पर आधारित था। इस ज्ञान का उपयोग उन्हें सही मायनों में अंतर्राष्ट्रीय फलक पर करना था। जुबली साउथ के जरिए वे धनी देशों की अन्यायपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय नीतियों के खिलाफ एक तरह के क्रूसेडर बनकर उभरे तथा गरीब देशों पर थोपे जाने वाले अन्यायपूर्ण ऋण को रद्द करने के लिए चले अतर्राष्ट्रीय संघर्ष के अगली जमात के लोगों में से एक थे। वे लंबे समय तक वर्ल्ड सोशल फोरम के अंतर्राष्ट्रीय फोरम के सदस्य रहे तथा अपनी मृत्यु तक इसकी प्रमुख आवाजों में से एक बने रहे। वे विज्ञान व लोकतंत्र के लिए बने अंतर्राष्ट्रीय फोरम के संस्थापकों में से एक थे।

विनोद हिन्दी और अंग्रेजी दोनों के बहुत अच्छे वक्ता थे। उनके पास शब्दों का ऐसा जादू था कि वे बेहद निंदा करने वाले विरोधियों को भी सामाजिक बदलाव में यकीन करने वालों में बदल सकते थे। वे एक कुशल गायक भी थे। उनकी मधुर आवाज अक्सर लंबे व थकान भरे दिन के अंत में इकट्ठा हुए कार्यकर्ताओं को आल्हादित कर देती थी।

पीपुल्स साइंस मूवमेंट, साक्षरता व शिक्षा संबंधी आंदोलन तथा अन्य सभी जन आंदोलन- विनोद की शारीरिक उपस्थिति की कमी महसूस करते रहेंगे। किन्तु विनोद जैसे साथी कभी मरते नहीं। वे अपने काम के जरिए हमारे बीच जीवित बने रहते हैं। जिन लोगों के साथ उन्होंने काम किया उन लोगों के दिलो-दिमाग व संघर्ष में वे हमेशा साथ बने रहेंगे।

भारत ज्ञान विज्ञान समिति अपने एक संस्थापक को, आजीवन साथ निभाने वाले एक दोस्त को व ज्ञान विज्ञान आंदोलन के एक सहयात्री को श्रद्धांजली अर्पित करती है। उनकी यादें व काम देश भर के बीजीवीएस कार्यकर्ताओं के लिए प्रेरणा का स्रोत बनी रहेंगी। ◆